International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628
Received: 15-03-2026, Accepted: 15-04-2026, Published: 30-04-2026
Volume 8, Issue 2, 2026, Page No. 55-58

धारकुंडी पर्यटन का धार्मिक सांस्कृतिक परिदृश्य का अध्ययन – सतना जिले के विशेष संदर्भ में

डॉ. जिया लाल राठौर
भूगोल विभाग, शासकीय महाविद्यालय जैतपुर, जिला–शहडोल, मध्य प्रदेश, भारत

शोध सारांश
धारकुंडी, मध्य प्रदेश के सतना जिले का एक प्रमुख धार्मिक एवं प्राकृतिक पर्यटन स्थल है, जो अपनी आध्यात्मिक महत्ता, प्राकृतिक सौंदर्य एवं सांस्कृतिक विविधता के लिए प्रसिद्ध है। यह स्थल न केवल श्रद्धालुओं का केंद्र है, बल्कि यहाँ की सांस्कृतिक परंपराएँ, मेले, लोककथाएँ और प्राकृतिक वातावरण इसे पर्यटन के दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण बनाते हैं। इस शोध का उद्देश्य धारकुंडी के धार्मिक–सांस्कृतिक परिदृश्य का अध्ययन करते हुए यह जानना है कि यहाँ का पर्यटन किस प्रकार स्थानीय समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। साथ ही, धार्मिक पर्यटन के सतत विकास की संभावनाओं और चुनौतियों का विश्लेषण भी किया गया है।

मूल शब्द: धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यटन आदि

भारत को विविध धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं की भूमि कहा जाता है। यहाँ के प्रत्येक क्षेत्र में धार्मिक स्थलों का अपना विशिष्ट महत्व है। मध्य प्रदेश का सतना जिला, विंध्याचल पर्वत श्रृंखला के निकट होने के कारण धार्मिक आस्था एवं प्राकृतिक सौंदर्य दोनों का संगम प्रस्तुत करता है।

इसी जिले में स्थित धारकुंडी आश्रम एक प्रमुख साधना स्थल है, जो संत प्रभुदास महाराज की तपोभूमि के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ प्रतिवर्ष हजारों श्रद्धालु दर्शन, साधना और प्राकृतिक पर्यटन के लिए आते हैं।

धारकुंडी का धार्मिक महत्व केवल पूजा–अर्चना तक सीमित नहीं है, बल्कि यहाँ की लोकसंस्कृति, परंपराएँ, धार्मिक मेले और स्थानीय जनजीवन में गहराई से रची–बसी हैं। यह स्थल ग्रामीण पर्यटन, सांस्कृतिक संरक्षण और पर्यावरणीय संतुलन के दृष्टिकोण से भी अध्ययन योग्य है।भारत एक विविधता से परिपूर्ण देश है जहाँ धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन का विशेष महत्व है। मध्यप्रदेश के सतना जिले में स्थित धारकुंडी एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है, जो आध्यात्मिक साधना, प्राकृतिक सौंदर्य और संस्कृति का संगम है। यह क्षेत्र अनेक श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को आकर्षित करता है। इस शोध का उद्देश्य धारकुंडी के धार्मिक–सांस्कृतिक महत्व, पर्यटन की संभावनाओं और उससे संबंधित सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना है।

अध्ययन क्षेत्र का विवरण

अध्ययन के लिए चयनित सतना जिले में स्थित धारकुंडी पर्यटन स्थल का अक्षांश और देशांतर लगभग 24°47'42" उत्तर और 81°9'8" पूर्व उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित है। यह स्थान सतना से लगभग 120 किमी, रीवा से 140 किमी और मैहर से लगभग 100 किमी की दूरी पर स्थित है। समुद्र तल से लगभग 400–450 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

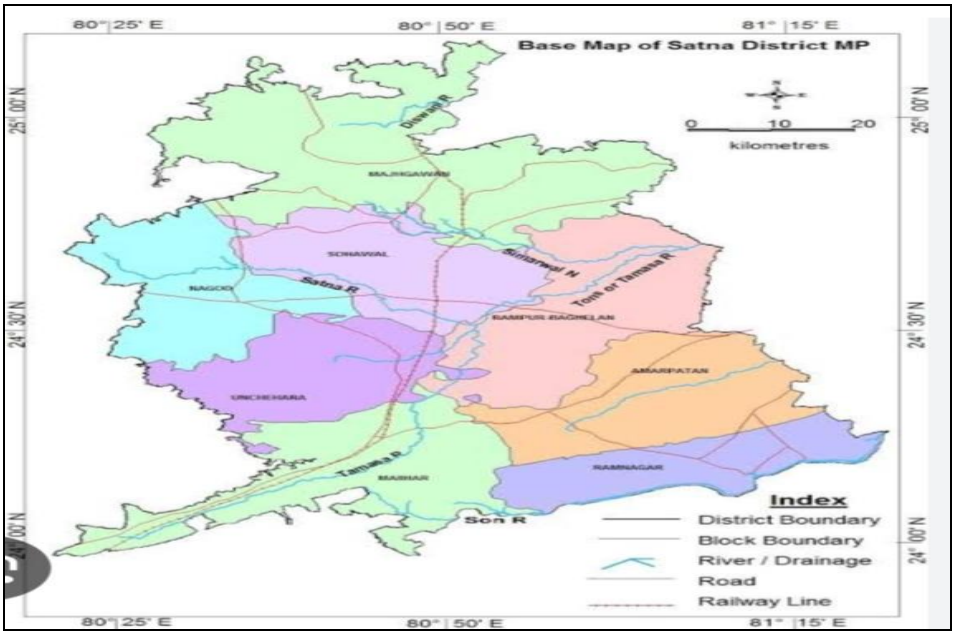

यहाँ की जलवायु उप–उष्णकटिबंधीय है, जिसमें ग्रीष्म ऋतु में तापमान 40°C तक पहुँचता है और शीत ऋतु में 10°C तक गिर जाता है। यह क्षेत्र घने जंगलों, झरनों और पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहाँ से बहने वाली मोरार नदी क्षेत्र की प्रमुख जलधारा

है। धारकुंडी का भू–आकृतिक स्वरूप पथरीला होने के बावजूद यहाँ की हरियाली और जलप्रपात पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। धार्मिक दृष्टि से यह क्षेत्र अत्यंत पूजनीय है।

प्रमुख स्थल: राम आश्रम और साधु संत परंपरा सीताकुंड एवं लक्ष्मण गुफा पवित्र जलप्रपात और प्राकृतिक झरने

वार्षिक धार्मिक मेले और सांस्कृतिक आयोजन यह स्थान विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं के बीच स्थित है और अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। धारकुंडी मध्यप्रदेश के सतना जिले के मझगवां तहसील में स्थित एक प्रसिद्ध धार्मिक एवं प्राकृतिक स्थल है। यह स्थल विंध्याचल पर्वत श्रृंखला के मध्य घनेवनों और प्राकृतिक झरनों से घिरा हुआ है।

धार्मिक महत्व

यह स्थल संत प्रभुदास महाराज की तपोभूमि के रूप में प्रसिद्ध है। प्रति वर्ष यहाँ रामनवमी, गुरु पूर्णिमा एवं सावन मास में धार्मिक मेले आयोजित किए जाते हैं।

सांस्कृतिक विशेषताएँ

धारकुंडी क्षेत्र में लोकगीत, लोकनृत्य, कथा– कीर्तन और धार्मिक अनुष्ठान स्थानीय संस्कृति की पहचान हैं। प्राकृतिक झरने, गुफाएँ, आश्रम, साधना स्थलों के साथ–साथ आस–पास के प्राकृतिक परिदृश्य इसे धार्मिक एवं इको–टूरिज़्म दोनों दृष्टियों से आकर्षक बनाते हैं। धारकुंडी सतना शहर से लगभग 65 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जहाँ तक सड़क मार्ग द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है। निकटतम रेलवे स्टेशन सतना और निकटतम हवाई अड्डा प्रयागराज (इलाहाबाद) है। धारकुंडी, सतना जिले के चित्रकूट उपक्षेत्र में स्थित है। यह स्थल विशेष रूप से परमहंस रामकृष्ण दास जी महाराज की तपोभूमि के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ का शांत वातावरण, प्राकृतिक वन, जलधाराएं, गुफाएं और धार्मिक गतिविधियाँ इसे एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल बनाते हैं।

अध्ययन उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र शोध का मुख्य उद्देश्य धारकुंडी के धार्मिक–सांस्कृतिक परिदृश्य का गहन विश्लेषण करना इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्नलिखित बिंदु निर्धारित किए गए हैं

1. धारकुंडी के धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व का अध्ययन करना।
2. क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियों के विकास और उनके सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना।
3. स्थानीय निवासियों की धार्मिक आस्था, परंपराओं एवं जीवनशैली पर पर्यटन के प्रभावों का मूल्यांकन करना।
4. पर्यटन से संबंधित सुविधाओं (जैसे:–आवास, परिवहन, स्वच्छता आदि) की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
5. पर्यावरणीय संतुलन एवं सांस्कृतिक संरक्षण के दृष्टिकोण से सतत पर्यटन विकास की संभावनाओं का आकलन करना। धारकुंडी के धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण।
6. धारकुंडी को धार्मिक–सांस्कृतिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

आँकड़ों का संकलन व विश्लेषण

1. प्राथमिक आँकड़े

अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत स्थल पर सर्वेक्षण (Field Survey) द्वारा स्थानीय निवासियों, पर्यटकों एवं साधु–संतों से साक्षात्कार लिए गए। प्रश्नावली के माध्यम से पर्यटन गतिविधियों, धार्मिक आयोजनों, सुविधाओं और स्थानीय रोजगार से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई। स्थल निरीक्षण (Observation) द्वारा धार्मिक स्थलों, आश्रमों, झरनों और सांस्कृतिक आयोजनों का प्रत्यक्ष अध्ययन किया गया।

2. द्वितीयक आँकड़े

शोध में क्षेत्रीय सर्वेक्षण, साक्षात्कार और द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। परिणामस्वरूप यह पाया गया कि धारकुंडी में धार्मिक पर्यटन से स्थानीय रोजगार, हस्तशिल्प, पारंपरिक भोजन एवं लोककला को बढ़ावा मिला है, परंतु पर्यावरणीय संरक्षण एवं आधारभूत संरचना के क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता है। संग्रहित आँकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि दृधारकुंडी में प्रतिवर्ष लगभग 30,000 से अधिक श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। धार्मिक मेले और उत्सवों के समय स्थानीय बाजारों में व्यापारिक गतिविधियाँ बढ़ जाती हैं। 70ः स्थानीय परिवार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पर्यटन से जुड़कर आय अर्जित करते हैं। पर्यावरणीय दृष्टि से देखा जाए तो पर्यटन स्थल में पर्यटक प्लास्टिक, कचरा, और खान–पान के समान को कूड़े में नहीं डालते बल्कि पूरे स्थल में फैलाकर चले जाते हैं जिससे वहां के लोगों को प्रदूषण की समस्या देखने को मिलती है। जो नए पर्यटक आते हैं उनको भी गंदगी का सामना करना पड़ता है और वे प्रदूषण के कारण बीमार हो जाते हैं।

समस्या एवं समाधान

मुख्य समस्याएँ

1. **पर्यटन सुविधाओं की कमी:** आवास, पेयजल, शौचालय, मार्ग संकेतक और स्वच्छता की स्थिति पर्याप्त नहीं है। वहां रुकने के लिए आवास होना बहुत ही जरूरी है।

2. **पर्यावरणीय क्षरण:** बढ़ती भीड़ और अव्यवस्थित कचरा प्रबंधन से प्राकृतिक वातावरण प्रभावित हो रहा है।

3. **सड़क एवं यातायात समस्या:** मार्ग संकरे एवं ऊबड़–खाबड़ हैं, जिससे पर्यटकों को कठिनाई होती है।

4. **प्रचार–प्रसार की कमी:** धारकुंडी का धार्मिक व सांस्कृतिक महत्व व्यापक स्तर पर प्रचारित नहीं है। शासन प्रशासन के द्वारा इस पर्यटन स्थल का विकास होना सुनिश्चित है ताकि सभी श्रद्धालु आकर दर्शन कर सके।

5. **स्थानीय जनसंख्या की भागीदारी का अभाव:** पर्यटन विकास योजनाओं में स्थानीय लोगों की सक्रिय भूमिका अपेक्षाकृत कम है जिसका सीधा प्रभाव स्थानीय लोगों को मिलने वाले रोजगार के अवसरों पर पड़ता है।

संभावित समाधान

1. **आधारभूत ढाँचे का विकास:** आवास, सड़क, पेयजल और स्वच्छता सुविधाओं को प्राथमिकता दी जाए।

2. **पर्यावरण संरक्षण योजनाएँ:** वृक्षारोपण, कचरा प्रबंधन और पर्यावरणदृअनुकूल पर्यटन को बढ़ावा दिया जाए।

3. **स्थानीय सहभागिता:** ग्रामीण युवाओं को पर्यटन मार्गदर्शक, हस्तशिल्प विक्रेता व सेवा प्रदाता के रूप में प्रशिक्षित किया जाए।

4. **डिजिटल प्रचार:** सोशल मीडिया और पर्यटन वेबसाइटों के माध्यम से धारकुंडी का प्रचार किया जाए।

5. **सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन:** स्थानीय लोकनृत्य, लोकगीत और धार्मिक अनुष्ठानों को राज्य स्तरीय मंच प्रदान किया।

धारकुंडी पर्यटन स्थल के सामाजिक प्रभाव

1. सामाजिक एकता एवं सकारात्मक प्रभाव

धारकुंडी में विभिन्न क्षेत्रों और जातियों के श्रद्धालु एकत्रित होते हैं। इससे स्थानीय समाज में धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक एकता और पारस्परिक सहयोग की भावना विकसित हुई है। धार्मिक मेलों और आयोजनों के दौरान सामूहिक भोजन, सेवा और भक्ति कार्यक्रमों से समाज में भाईचारा और एकजुटता बढ़ी है।

2. रोजगार और जीवन–स्तर में सुधार

पर्यटन के कारण स्थानीय लोगों को रोजगार के नए अवसर प्राप्त हुए हैं। जैसे:–भोजनालय, आवास, परिवहन, मार्गदर्शन, फूल–माला बिक्री आदि। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन–स्तर में सुधार हुआ है और युवाओं का पलायन कुछ हद तक कम हुआ है।

3. शिक्षा और जागरूकता में वृद्धि

पर्यटन से जुड़े लोगों में शिक्षा, स्वच्छता और व्यवहारिक जागरूकता बढ़ी है। धार्मिक आयोजनों के समय सफाई, पर्यावरण संरक्षण और व्यवस्था बनाए रखने की भावना ने सामाजिक अनुशासन को भी प्रोत्साहन दिया है।

4. सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण

स्थानीय लोकगीत, लोकनृत्य, कथा–कीर्तन, और धार्मिक अनुष्ठान पर्यटन के माध्यम से व्यापक स्तर पर प्रसिद्ध हुए हैं। इससे क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और पुनर्जीवन हुआ है।

5. महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि

पर्यटन गतिविधियों में स्थानीय महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। जैसे:–प्रसाद वितरण, हस्तशिल्प, भोजनालय संचालन आदि में। इससे महिलाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक सम्मान बढ़ा है।

धारकुंडी में बढ़ते पर्यटन से लोगों का दृष्टिकोण अधिक खुला, आधुनिक और सहभागी बना है। लोग अब धार्मिकता को केवल पूजा तक सीमित न रखकर समाज सेवा, पर्यावरण संरक्षण और विकास से भी जोड़ने लगे हैं। सामाजिक दृष्टिकोण का परिवर्तन भीड़–भाड़ और शोरगुल से स्थानीय शांति प्रभावित होती है। कुछ स्थानों पर व्यापारीकरण और धार्मिकता का बाहरी प्रदर्शन बढ़ा है। बाहरी पर्यटकों से संस्कृति में परिवर्तन (modern influence) देखा गया है।

धारकुंडी पर्यटन स्थल के नकारात्मक प्रभाव

1. पर्यावरणीय क्षरण

तीर्थ यात्रियों की बढ़ती संख्या के कारण कचरा, प्लास्टिक बोतलें और भोजन के अवशेष खुले में फेंके जाते हैं। जंगलों और प्राकृतिक झरनों के आसपास प्रदूषण और भूमि कटाव बढ़ रहा है। जलस्रोतों में नहाने और पूजा–सामग्री विसर्जन से जल–प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो रही है।

2. सांस्कृतिक व्यावसायीकरण

धार्मिक आयोजनों में आस्था के स्थान पर व्यापारिक प्रवृत्ति बढ़ रही है। कुछ दुकानदार और पंडे, श्रद्धालुओं से अधिक शुल्क वसूलते हैं, जिससे धार्मिक वातावरण पर नकारात्मक असर पड़ता है। पारंपरिक लोक–कला और भक्ति की जगह आधुनिक मनोरंजन गतिविधियाँ बढ़ने लगी हैं।

3. भीड़–भाड़ में प्रशासन व्यवस्था

प्रमुख आयोजनों (जैसे गुरुपूर्णिमा, रामनवमी) के दौरान अत्यधिक भीड़ से आवागमन और स्वच्छता की समस्या होती है। यातायात जाम और पार्किंग की कमी से स्थानीय निवासियों को असुविधा होती है।

4. सामाजिक असंतुलन

पर्यटन से जुड़ी आय कुछ सीमित वर्गों तक ही पहुँचती है, जिससे आर्थिक असमानता बढ़ रही है। बाहरी पर्यटकों के बढ़ते प्रभाव से स्थानीय परंपराओं में आधुनिकता का अतिक्रमण देखा जा रहा है।

5. धार्मिक भावना का पतन

श्रद्धा और भक्ति के स्थान पर प्रदर्शन और दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ी है। धार्मिक स्थल पर ध्वनि–प्रदूषण, ऊँचे संगीत और फोटो शूटिंग जैसी गतिविधियाँ, धार्मिक शांति को प्रभावित करती हैं।

6. प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव

सीमित जल, बिजली और आवास सुविधाएँ बड़ी संख्या में आने वाले पर्यटकों की जरूरत पूरी नहीं कर पातीं। इससे स्थानीय निवासियों के संसाधनों पर दबाव बढ़ जाता है।

7. स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधी समस्याए

भीड़ के दौरान खुले में भोजन, अस्थायी आवास और गंदगी से संक्रामक रोगों का खतरा बढ़ जाता है। पर्याप्त शौचालय और कचरा प्रबंधन की कमी से जनस्वास्थ्य प्रभावित होता है।

पर्यटन विकास की संभावनाएं

1. **धार्मिक पर्यटन:** आश्रम और गुफाएँ आध्यात्मिक साधकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन सकती हैं।

2. **प्राकृतिक पर्यटन:** झरनों, पहाड़ियों और हरियाली के कारण यह इको–टूरिज्म के लिए उपयुक्त है।

3. **सांस्कृतिक पर्यटन:** स्थानीय जनजातीय संस्कृति और लोक परंपराएँ पर्यटकों के लिए विशेष अनुभव प्रदान कर सकती हैं।

4. **शैक्षिक पर्यटन:** भौगोलिक, पर्यावरणीय एवं जैव–विविधता अध्ययन हेतु छात्र–छत्राओ और शोधार्थियों के लिए उपयोगी स्थल।

5. **एडवेंचर पर्यटन:** ट्रैकिंग, नेचर वॉक, रॉक क्लाइम्बिंग जैसे साहसिक पर्यटन की संभावनाएं।

विकास हेतु आवश्यक कदम

1. सड़क और परिवहन सुविधा में सुधार
2. आवास, भोजन और स्वच्छता सुविधाओं का विकास
3. स्थानीय युवाओं को पर्यटन से जोड़कर रोजगार के अवसर
4. सरकारी एवं निजी निवेश को प्रोत्साहन
5. पर्यावरणीय संतुलन का ध्यान रखते हुए इको–फ्रेंडली विकास

निष्कर्ष

धारकुंडी सतना जिले का एक अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्र है, जहाँ आस्था, अध्यात्म और प्रकृति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। इस क्षेत्र का धार्मिक पर्यटन स्थानीय समाज की आर्थिक प्रगति, सांस्कृतिक संरक्षण और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

शोध से यह स्पष्ट हुआ कि

1. धारकुंडी की धार्मिक परंपराएँ स्थानीय जन–जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं।

2. यहाँ पर्यटन के विकास से क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को बल मिला है, किन्तु पर्यावरणीय संतुलन और आधारभूत सुविधाओं की कमी अभी भी एक चुनौती है।
3. यदि पर्यटन विकास योजनाएँ सतत विकास (Sustainable Development) के सिद्धांतों पर आधारित हों और स्थानीय समुदाय को सक्रिय रूप से जोड़ा जाए, तो धारकुंडी राष्ट्रीय स्तर का धार्मिक–सांस्कृतिक पर्यटन केंद्र बन सकता है।
4. सांस्कृतिक मेले, लोककला, और पारंपरिक आयोजन न केवल क्षेत्र की पहचान हैं, बल्कि धार्मिक एकता और सामाजिक सौहार्द के प्रतीक भी हैं।

संदर्भ सूची

1. मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम, सतना जिला रिपोर्ट (2023)
2. भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय – "धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत" रिपोर्ट (2022)
3. शर्मा, आर.के. (2021) — भारतीय संस्कृति और पर्यटन विकास, हिंदी प्रकाशन, दिल्ली
4. पाण्डेय, एम.पी. (2020) — मध्यप्रदेश के धार्मिक स्थल, नर्मदा प्रकाशन, भोपाल
5. गुप्ता, पी. दास (2004), पर्यटन एक अध्ययन मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ क्र. 67–68
6. प्रदीप कुमार (2016), पर्यटन उद्योग की अवधारणा एवम उत्तर प्रदेश के पर्यटन उद्योग में रोजगार की संभावनाएं का अध्ययन Shodhparak Vaicharik Patrika, Vol 5, Issue 8, p
7. शर्मा, आर.एन. (2018), भारतीय पर्यटन का भौगोलिक अध्ययन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. मिश्रा, आर.के. (2020), सांस्कृतिक पर्यटन और भारतीय विरासत, प्रकाशन संस्थान, वाराणसी।
9. सिंह, जे.एल. (2019), विंध्य क्षेत्र के धार्मिक पर्यटन केंद्रों का भूगोल, अवध प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. मध्य प्रदेश शासन, सतना जिला गजेटियर, भोपाल,
11. ठाकुर, बी.के. (2021), धार्मिक पर्यटन और ग्रामीण विकास, केंद्रीय विश्वविद्यालय प्रकाशन, रीवा।
12. Wmptourism.com
13. www-satna.nic.in